जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भौल जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करौं हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कह्वौं नरिंद। रानिंग राज बर ॥
चौरा सिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान। बीर सारंग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्गयौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुब्ब बैर साल्यौ हियैं ॥
केतीक बत्त संभरि धरा। रहै रंग चच्चर कियैं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोभत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं केलि कलहंतं। सम्झै सूल षग्ग [2]मग्गायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोली राव रानिंग। बोलि चौरासिम भामं ॥
स्यामा स्याम नरिंद। भीर कह्वी रन थानं ॥
अति उदार अति रूप। भूप साइं रन रष्षन ॥
चाहुआन बरसिंह। [3]षिभयौ बड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुबर बैर कह्वौ विषम ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुभर भुत्ति लभ्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर। जुग जोग [4]नह लभ्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अभ्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंशा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग कौ सोन जोनं ॥
छं० ॥ १२ ॥

(१) ए. कृ. को., "तंकेलि कुलहंता"। (२) ए. कृ. को.-मग्गाइं।
(३) मो.-षिज्यौ। (४) ए. कृ. को.-नहिं।

करै कोन जमजोति जोत्यं प्रकारं । गनै कोन वेलू सु गंगा प्रकारं ॥
गिनै कोन तारक्क ते [1]तेज भोरै । लरै कोन चालुक्क सो जुद्ध सोरै ॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा ॥ फट्टै पुड़ु फुरमानं । धाये धराजित्त जिताइं ॥
इम जुट्टे सब सेनं । ज्यों मू नीर वढ्ढि सरताइं ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य ।

विअष्षरी ॥ जुट्टे दल पहु पंग [2]अपारं । हैगै बर भर लभ्भि न सारं ॥
बनै हयं पय पंष समानं । षहं भूमी जनु पंष उड़ानं ॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं । भद्दव बद्दल जानि समीरं ॥
दिषियै सूर नूर षह पूरं । संध्या सागर [3]नूर करूरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे । धावैं धर पग पाहर कारे ॥
कच्छे कच्छै बंधै डोरी । चंदन षोरि षिलै जनु होरी ॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लैं कोई । विचरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिन्नै जनु नट्ठं । षंडा कढ्ढि बढ़े गज [4]दट्ठं ॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न छिज्जै । धार अनी कर बर ठेलिज्जै ॥
चंचल अस्वह [5]नंषत सूरं । सूर तेज जिन मुष्ष सनूरं ॥ छं० ॥ १९ ॥
बंकी भोंह भयंकर नैनं । फूली बंबर लग्गे गैनं ॥
रत्ते [6]स्वामि ध्रम्मं रस रंगं । जोग जुगति मन चढ्ढत जंगं ॥
छं० ॥ २० ॥

नेह न देह न माया ग्रेहं । चिंतत सदा ब्रह्म मन लेहं ॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं । सुभ्भत सेन मनों सुभ्र गंगं ॥ छं० ॥ २१ ॥
गड्ढ परे न्रप गाहत गड्ढं । जिम वाराह मोथ रस दड्ढं ॥

(१) मो.-मेज । (२) ए. कृ. को.-प्रपारं । (३) ए. कृ. को.-सूर ।
(४) मो.-वढ्ढं, वट्ठं । (५) मो.-जनुंषत । (६) मो.-साम ।

श्रौगुन श्रंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रत्ते घग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसहूं दिसि दारुन दल बढ्ढं। ज्यों धुर बद्दल भद्दव चढ्ढं॥ छं०॥ २३॥
सिलह सज्जि बढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥ छं०॥ २४॥
अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरूं भट्ट तत्त बुधि जानं॥
बंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब बंधि रु छंडे॥ छं०॥ २५॥
सांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं०॥ २६॥
लीने भीम संग चव मंची। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंची॥
सुर्ग मृत्यु पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं०॥ २७॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। बर सिघंन आकार॥ छं०॥ २८॥
ए बुलाइ चालुक्क बर। मंची भोरी राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज॥ छं०॥ २९॥
[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंची मंच तब। सुनि भीमंग सुदेव॥
धरती वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव॥ छं०॥ ३१॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौ।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-न्यंद। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण ।

साटक ॥ भूमीनं धर ध्रम्म क्रम्म [1]निरतं, बंध्यो बध्रें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्रं कारनं ॥
केकइयं भुअ काज रामय बनं, दसरथ्थ मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, स्नेहाबयं भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना ।

कवित्त ॥ जा जीवनं जग पाइ । आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रषह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरनं प्रभु कोवह ॥
जा जीवन आरंभ । कित्ति सा ध्रम्मं सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह । तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सी जीवन द्रुम पहुनि करि । अच्छित सती समान ॥
चावहिसि नष्षै निडरं । वौ लभ्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन-सज कर तय्यारी करना ।

सुनत मंत चल्लिय न्त्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बद्दल घह उन्नए । दिठ्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं । [6]ज्वाला मल्लि [7]ज्वालाह छत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी । है हिलन हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं० ॥ ३६ ॥

(१) मो.-सरसं । (२) मो.-काज ।
(३) मो.-सर । (४) ए. कृ. कौ.-पिम ।
(५) ए. कृ. को.-भमंग । (६) मो.-क्षाला ।
(७) मो.-क्षालाह । (८) ए. कृ. को.-लग्गी ।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै सूरतं बीरं॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उग्यौ छत्र छिति राज सिर। चिषत बीर रस पान॥
यों सब सेना रज्जियैं। ज्यौं जोगिंद जुवान॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंच मंचिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना।

आनिश्च [2]अक्षित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न॥
पुब्ब बैर सोझित्ति कौ। झिरि भंजै रिन तन्न॥ छं० ॥ ४० ॥
पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रक्कत्त॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहै। तौ भारथ्थ सु जित्त॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सल्ली मिल्ली कज्जल वरन। भेक भैंयानक भंति॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गें गज पंति॥छं०॥४२॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुब्भर डुल्लियं॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाहही॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावहीं॥छं०॥४३॥

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनीत।

गज बहत मदहद [1]मनहुँ घन भद छुट्टि छिंछन उभ्भरैं ॥
पग जोरि मोरि मरोरि सुर जनु द्रिष्षि सुरपति लुभ्भरैं ॥
बनि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही ॥
मनु सिषर गिरि वर काम अंगन छच चम्मर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत बज्जन चंम्महीं ॥
वै कोट ओटन अगड़ मन्नत सिषर मिर रद झम्महीं ॥
दल मुष्प मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमह मभ्भ मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
बर मंगि बाजिय सिलह संजिय [2]वहै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत। रोह रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस। संग सामंत सुराजं ॥
षीची राव प्रसंग। जाम जद्दाँ घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय। भान भट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाह [3]पग्गार भर। बल्लिय राव बलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास सँग। कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था।

दूहा ॥ जिन कंठन ढिल्ली नयर। ते रष्षे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरह। कलह न [4]इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) मो.-मनल। (२) मो.-वहौ।
(३) ए. कृ. को.-पागार। (४) ए. कृ. को.-इछत।

सुनत पुकारह छोह छकि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चढ़े हयन। बिंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर जानत जंग ॥ छं० ॥ ५० ॥

उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कलं मलि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोझत्ती बर बैर। बहुरि हालाहल मच्चौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। [2]लेष लंघै को रच्चौ ॥
करि [3]न्हान दान इष्टं सु जंप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय बयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥ छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संग्रम कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बध्यौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ। धुअ प्रमान पय [5]डड षरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उभ्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर बिचार। सजि चढ़े बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आउ। (५) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

*धरा धरा कंपिय भार। .... ॥
चढ़ि राइ चालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुथान ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज। बर बज्जि [2]विजयत बाज ॥
तन [3]चविधि तूल तरंग। विधि मंडि बीर विजंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देषि सूर सुरंग। उर होत अरियन पंग ॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माध नूत तमाल ॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचग अच्छतुपार। पाहार फारि प्रहारि ॥
उड्डि वृत्त तिड्डिय सेन। मनों राम लंका लेन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों कां उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का वल वर्णन।

कवित्त ॥ चिविध साज वड्डिय। अवाज भेरी कोकिल सुर ॥
भवर भुंड भंकार। चौर मोरह ढुरंत बर ॥
बर बसंत सम वीर। नच्चि तोषार चिभंगिय ॥
[4]रन रत्तौ सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय ॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरषि सूर बज्जिय करस ॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन। सुभर कंक मंडिय सरस ॥ छं० ॥ ५८ ॥

युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ सुबर बीर मंड्यौ समर। रन उतंग सोमेस ॥
दै दुबाह [5]दुज्जन घरी। घरी सु अक्क तरेस ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान।

कवित्त ॥ जा दिन जीव रु जम्म। कम्मता दिज जम पच्छै ॥
सुष्य दुष्य जय अजय। लोभ माया नन सुच्छै ॥

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छं० ५३ के चतुर्थ चरण का "साजि चढ़े बीर सुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है। (२) मो.-विजयसु। (३) ए. कृ. को.-त्रिविधि।
(४) को. कृ.-नर, ए.-मर। (१) ए. कृ.-दुज्जर्न।

काल कलह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरुद्धौ ॥
[1]मुगति मग्ग सुझ्झै न॰। ग्यान अंतह किन सुद्धौ ॥
प्रतिव्यंब अंब अंबह जुगति। भुगति क्रम्म सह उद्धरै ॥
केवल सु भ्रम्म [2]षिचिय तनह। कन्ह कंक जौ सुद्धरै ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। *नर निरदोष सदोष ॥
संभरवै [3]संमर सुमति। न्रप लगि सुमत जमोष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय ॥
सुमरि साह इक देव। द्रुवन दल देषि [4]दपट्टिय ॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना ॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरीठ भयन्ना ॥
फूलह सु धार धर कंन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह घरिय ॥
पग सट्ठि नट्ठि भौमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय ॥छं०॥६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजास्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ काल चंपि बर चंपि कल। नर निर्घोष निसान ॥
सुबर बीर हिंदुअ सयन। बर बीरा रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

†कलाकल ॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं ॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं ॥
छं० ॥ ६४ ॥
झमकंत सु दंतन असिं झरी। जनु विज्जुलि पष्षत मेघ परी ॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगद्दि पनं ॥छं०॥६५॥

---

(१) कृ. को.-मुकाति, ए.-सुकाति। (२) ए. कृ. को.-छत्री। (३) ए.-संभर।
*ए. कृ. को.-नर निर षोस दोष। (४) ए.-दुयट्टिय, मो. को.-लपट्टिय।
(५) मो.-नौ रस में। (६) मो.-सज्जि।

† इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं।

बजि [1]डौरुअ डक्क निसान घुरं। जनु बीर जगावत बीर उरं ॥
दुअ सेन बलं असियो बरषी। बचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी ॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुआर झरै। वहु-यौ·नन पंजर आय परै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर भगर जिम षेल। ठेल सेलम सम ठिल्लहिं ॥
इक धुकत धर तुट्टि। *इक वल्लन गल्ल मिल्लहिं ॥
इक कमंध उठंत। इक अंतन आलुझझहिं ॥
इक हथ्थ [3]पग झरहिं। टिक्कि षग [4]पग बिन झुझझहिं ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छिचिन कन्यौ ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर। इम सु जुद्ध कन्हह [7]भिन्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सीसन बिन किन्निय ॥
हय किन्निय बिन नरनि। सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]षुद्धा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्षिय ॥
पल हारिय पल पूर। हूर कन्हा भय भिष्षिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी अम्मल। सचल सस्त्र स्रुह झंझरिय ॥
मदमत्त गंध महियों [9]ढुरिय। मनों वाय ह्च्छह गुरिय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो संभरि सोमेस बर। सो कीनी पहिचान ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-डरुअ। (२) मो.-जिनें।
* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहि।
(३) ए. कृ. को.-षग। (४) मो.-षग। (५) ए. कृ. को.-तरफंत।
(६) ए. कृ. को.-छत्री। (७) ए. कृ. को.-लन्यौ। (८) ए. षुधा, कृ.-षुदया।
(९) मो.-ढुरत। (१०) ए. कृ. को.-आधारिय।
(११) ए. कृ. को. से भरिवै सोमेस वर।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत । मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध । वृद्ध वय कामति सोचन ॥
[2]पुत्त बिना बिन बंध । बल सु बंध्यौ भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध । सुष्य लष्यं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन । *नय तरत्त रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सौं । सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते । धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मनौं काल दंते, रसं रुद्र रत्ते । झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥ छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती । असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उच्चारंत छत्ती । महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥ छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं । भरै अंत भूमी, मनौं मेघ भूमी ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय न्त्रिघाइ । †मऱ्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम । धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ । कोन हाऱ्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक । कोन माया रस वित्तौ ॥

(१) मो.-धूम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरती सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

छह घरी श्रोन असिवर उद्यौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह सँजुत । [1]छुलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥ छं ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्धि विथ्थुरिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल बढ़ि चलिय । मरन मन किंकन जुट्टिय ॥
कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जंघ [2]मगर कर मीन । कच्छ पुष्परि पग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुड अनुड परि । बहत स्त्रर असरार ॥
*मानों जालुग अंत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर । ढाहि [3]दीनै [4]बरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा [5]तरु कान्है ॥
वे सराप नारद प्रमान । दरसन हर लड्डिय ॥
इन तमंग उत्तरै । सार कढ्ढ बर बढ्ढिय ॥
न्त्रिघ्घात घात मत्तौ कलह ।असुर सुरन मत्तौ [6]महन ॥
कढ्ढै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचंद [7]कित्ती कहन ॥छं०॥८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी ॥ बजे बीर बीरं सु सारं घनक्कैं । मह्मा मुक्ति बत्त सु बीरं रनक्कै ॥
गजे बीर बद्दं करन्नाल सद्दं । सनाहं सद्दूरं बहै सार हद्दं ॥छं०॥८१॥
नचै जंग रंगं ततथ्थे तथंगं । [8]लचै रंक चित्तं मनं सूर [9]पंगं ॥
बढै बंक कंकं ससंकौ धरानं । नगं नग्ग जुट्टे अमग्गं परानं ॥छं०॥८२॥

(१) ए. कृ. को.-बलि ।　(२) ए. कृ. को.-मकर ।
* ए. कृ. को. मनो जोग जुगत्ति को ।　(३) ए. कृ. को.-दीनौ ।
(४) ए. कृ. को.-वर ।　(५) मो.-तर ।　(६) ए.-सहन ।
(७) मो.-कीरति ।　(८) ए. कृ. को.-जंगं ।
(९) ए. कृ. को.-चलै ।

ठनक्कंत थंटं रनक्के नफेरी। मया मोह दोषन्न ह्वरन्न [1]नेरी ॥
धरं धार ढौरै ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्क फेरैं कि पंकं कुलालं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं ॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टै बल साजं ॥
दल दष्षिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्पौ ॥
[2]ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी झर रुप्पौ ॥
बिरचे कि [3]महिष बलबंड बल। दल [4]चमूह चवदंत हुअ ॥
न्रप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्षे ति दुव ॥ छं० ॥ ८४ ॥

रसावला ॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं ॥
छं० ॥ ८५ ॥

करें केलि कंकी, घुते लज्ज पंकी। करूरं करारे, मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ ८६ ॥

पियैं लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूजें, फिरं अश्व हूनें ॥
छं० ॥ ८७ ॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रत्त धारे ॥
छं० ॥ ८८ ॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं ॥
छं० ॥ ८९ ॥

दुअं मुष्ष लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति हूरं ॥
छं० ॥ ९० ॥

वहै श्रोन धारं, झरैं [6]झिन्न तारं। .... छं० ॥ ९१ ॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तमु। (३) ए. कृ. को.-वलष।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं । ज्यों मत्ते [1]वृषभ रोस रंगाइं ॥
गरजैं धर षुर षुंदे । तक्कैं घाइ भ्रप्प भ्रंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ।

दूहा ॥ भ्रंमर धर पन्नग असुर । पिषि सह रंष्पित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्षि क्रम । सुमन स [2]वृष्ट्रिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट । षिलै कि पन्नग मंच ॥
विस भौंए डंविस सबल । [3]सगति नहीं जुग [4]जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ वाम भ्रंग सजि संग । बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत । सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह । घंट घूंघर घनघोरं ॥
बष्षर पष्षर जीन । सार दद्दुर दल रोरं ॥
गज गांज बाजि नीसान धुनि । अति उब्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिंधू स धुनि । करन सु उथल्ल [5]पत्थल्लधर ॥छं०॥९५॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय । सजि सारंगी आइ ॥
षिभिर षेत घन घाइ मिलि । जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

---

(१) मो.-मनयं रोसं ।　　(२) मो.-द्रष्टिय ।
(३) मो.-सकति, ।　　(४) ए.-तंत्र ।　　(५) मो.-पथ्थ ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है, जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है ।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं करूरं करारे। छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघातं बीरं। फिर रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे ॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों सूर सीसं षसे चंद तारे ॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ षंडेव जानं ॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों धनं कूटकंती ॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वारुंत भूपाल भूपं ॥
जिनं कछ्छ वच्चं धरं ध्रम्म धारै। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं ध्रम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। हत्त अनुड्डिय सार ॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसरं अरि भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर षल चूरं ॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह सासूरं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं ॥

(१) ए. कृ. को.-सार। (२) मो.-तीरं।

जो वंडं करवान कर्षित दलं, अज्जेन आयातयं ॥
श्री बीरं चहुआन वानति बलं, चौलुक्क संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढ़े बान चहुआन चालुक्क षेतं। महा मंच विद्या गुरं सुक्र जेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे ज्ञानि प्रासाद बर्षा [१]प्रहारं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत बिज्जू करन्नाल सादं ॥
छुटी बान जंची उड़ी गेन अग्गी। [२]महादेव बीरं चषं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संमाल वेताल श्रीरं ॥
नचें न्नत्य नीसान नारद्द घाई। चढ़ी.व्योम विम्मान अपच्छरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्य गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्याल [३]ष्यालं विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [४]तबल दारं दुवं बिरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं ॥
दुअं खर पूतं दुअं [५]कस्य पाए। दुअं दंद द्वारुन्न बाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार बद्धे व रानं ॥
दुवं सैन स्याही जलं बद्दलानं। दुअं, गज्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रहत्तीय वेरा अचंती करारी ॥
[६]सरं जाल भालं भिदै जंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-पहारं। (२) ए. कृ. कौ.-महाबीर देवं।
(३) को.-षत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तल्ल।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयंनं भमंती॥
उछै छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं वृष्ट बंधूक पूजं [1]जुतंगं॥
छं० ॥ ११२ ॥

छटें मझ्झ सभझ्झं नरं केक कच्चे। लरें जंग हथ्थं बिना केक रच्चे॥
उड़ै पुप्परी षग्ग झारैं करारी। मनों चंद सूरं दधी पूज धारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघ्घाइ धट घूम लुट्टैं। [2]तिनं जम्म मरनं क्रमं बंध छुट्टैं॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमै॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे॥
कहै कव्वि वष्पान किं वर्नि तेनं। फलै [3]कृष्पि पच्छं मरंनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ। सार मत्तौ झोलाहल॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पस्सु पंषिन कोलाहल॥
धर परंत ढुरि धरनि। उत्त मंगत्तिहि कारहि॥
झर झरंत षग्गाह। बीर डंकिनि डक्कारहि॥
महि मच्चि मह्लरत मरन रन। सइ जाइ जय सुर करिय॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

हय गय नर भर परियँ। भिरिय भारथ सम्मानं॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [4]सु रारै॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन षिलहि॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋषि। (४) मो.-सुसारै।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदातीं एवं रावत सामंतों की संख्यां कथन।

बाजि नंषि सोमेस। सहस बर इक्क प्रमानं॥
[1]तिन मध कहि पंचास। बीर भारथ भरि पानं॥
तीन तीस घट परे। पन्यौ सोमेसर प्रेतं॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। कंक बंध्यौ सिर नेतं॥
लभ्भी सु मुगति अद्भुत जुगति। हंस हंकि हंसह मिल्यौ॥
सोमेस करी सोमेस गति। पंच तत्त पंचह मिल्यौ॥ छं०॥ ११८॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना।

दूहा॥ जुझ्झि पन्यौ सोमेस धर। डोला चालुक राय॥
दुहूं सेन झरि धर परे। बजी बत्त पग चाइ॥ छं०॥ ११९॥
नर भृत्य न्रप रिष्पि के। ज्यौं फिरि करिहैं झुझ्झ॥
चतुरानंन चिंता भई। नर भारथ्थ अबुझ्झ॥ छं०॥ १२०॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली।

गाथा॥ जा [2]मुक्ति जोगिंद। कालं काह भम्म भमाइं॥
सा मुक्ती सोमेसं। इक्क छिने लभ्भियं राजा॥ छं०॥ १२१॥
भूमी भरंत भरयं। कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं॥
जै जै जंपि जगत्तं। है है नभ्भ सद्द सुर यायं॥ छं०॥ १२२॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना।

कवित्त॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। भूमि सिज्जा अवधारिय॥
तात काज तिन पिंड। दान षोडस विचारिय॥
भद्द मद्द सहयौ। राज गति अव्व प्रकारं॥

(१) मो.-तिन मध्य सु पंचास। (२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुक्ति।

द्वादस दिन प्रथिराज । भूमि सज्या संथारं ॥
विन भोग भोज इक टंक करि । सुहथ दान दिय राज बर ॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ । इतौ दान जनमंत नर ॥ छं० ॥ १२३ ॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अट्ठ सहस दिय धेंन ।। *तब प्रथ्थी विधि धारिय ॥
हेम स्रुंग षुर हेम । तौल द्वादस हिमसारिय ॥
जुगति जुगति विधि नान । दान षोड़स विस्तारं ॥
तात वैर संग्रहन । लेनं प्रथिराज विचारं ॥
घृत मुक्कि पाघ बंधन तजिय । सुव्रत बीर लीनौ विषम ॥
चालुक्क भीम भर गंजिके । कढ़ौ तात उदरह सुषम ॥ छं० ॥ १२४ ॥
अरिल्ल ॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान । सध्यौ न तात बैरह विनान ॥
राजिंदु दृष्टि रग तेत नेन । बध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन ॥ छं ॥ १२५ ॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा ॥ सजन सेन चाहै न्रपति । बैर तात प्रथिराज ॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ । पच्छ सु जुद्धह काज ॥ छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त ॥ बोलि बिप्र प्रथिराज । तत्त बुद्धी अधिकारिय ॥
राज क्रंम सब जान । ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय ॥
जग्य जाप मति जोग । क्रम्म बंधन बल बंधन ॥
दिषत [1]मुष्प जनु [2]ब्रह्म । पाप भंजन जन सज्जन ॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-मुष्ष। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं। काल चिदस जानै सुमति ॥
सासँाति स्हर सोमह करन। सुविधि स्हर मंडी सुभति॥ छं० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुहत। जजनं सुजग्य पविच ॥
तच कोइ पुज्जै नहै। क्रम बारन बर मिच ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरबार बार। [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत, [3]रत्ति प्रथमौत जोग। जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव। तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति बिप्र इन विधि प्रकार। जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

मद्दि मगन मंडि नहिं निकट फंद। दिष्षंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग। अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज। सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम टक्क। अप्पै सु दान मानह विसिक्क ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज किन्न। बर बीर धीर साधंत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार में नृत्य गान होना।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिष्षा जहां ब्रम्म सुतं। करि अभिषेक न्हपान ॥ छं० ॥ १३४ ॥

(१) कृ.-साबधन। (२) ए. कृ. को.-चारु।
(३) ए. कृ. को.-रत्त। (४) कृ. ए.-नैंन। (५) को. मो.-राजन।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद्र। (७) मो.-मंति।

भ्रमरावली ॥ नव्र बीर नवं रस बीर नच्चौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्चौ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समात्त धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं॥
चिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु व्रनन कित्ति करं॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककन्न नसं॥
पहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं॥
छं० ॥ १३८॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारै॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुब्भ रोचन कसमीरं॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति॥
संसार भेद आभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रक्रति साधत [7]सुरति ॥छं०॥१४१॥

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगीं द्रपंगीति वाले। इकं मोल अंमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला विसालाति धारैं। [१]मयंका मुषी कंठ कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि। न्रप जै जै प्रथिराज॥
मनों इंदु सुरपुर गहन। उदै करै मनु स्राज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ स पते तिन महल। जहँ सामंत नरिंद॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि। मनों इंद्रानी इंद्र॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्रपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे। मनों कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी। मनों जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे। मनों मेनिका रंभ आषे अषारे॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै। बने कोन हन्नंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै। सब सामंतन सथ्थ॥
जस जा हथ्थन बिप्प के। भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर स्रूरं। सामंतं सत्त षट दूनं॥
ता अप्पन प्रथिराजं। चौ अग्गा लच्छि संग्रामं॥ छं० ॥ १४८ ॥

ईच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं। दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं। मनौ देवता जीव के जग्य जत्तं॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय। दुत्तिय निडर रठौर॥
इन अग्गह सुभ संत करि। तापछ सुभ्भर और॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक।

कवित्त ॥ कियौ तिलक बर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनौं भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुम्र सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छत्र। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिल्लिय आनि बध्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल ब्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कबिचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥३९॥
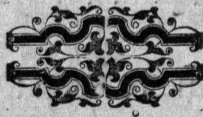
अथ पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना।

दूहा॥ †सुनि कगद प्रथिराज जब। बध्यौ भीम सोमेस॥
आतुर घरि आयौ जहां। दिल्लि देस नरेस॥ छं०॥ १॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन।

दूहा॥ किति कला कूरंभ वल। कहत चंद बरदाय॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय। जाइ सु भोरा राइ॥ छं०॥ २॥
सुनी राज प्रथिराज ने। झाला रानिंग रूय॥
विरद बुलावै महबली। छोंगा सज्यौ सधूय॥ छं०॥ ३॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कवित॥ छोंगा ला सिर छच। सीस बंध्यौ पज्जूनं॥
जस जयपत्त जु आनि। करै परसन सह [१]जनं॥
अप्पातें घर रैठि। रीस कीनी चालुक्का॥
हीय षटक्के साल। बात संभरि बालुक्का॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों। अप्पानौ दल टारियौ॥
पज्जून मलयसी बीर वर। करन कूच उच्चारयौ॥ छं०॥ ४॥

---

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छौगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है।

† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है।

(१) ए. कृ. को.-दूनं।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं। सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिंगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर॥
किये कूच पर कूच। काल घेऱ्यौ कि कूट गिर॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं॥
उदधि मद्धि जिम अनिल। जलधि लंका गढ़ जानं॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय। हक्काऱ्यौ पज्जून बल॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल॥ छं० ॥ ५॥

दूहा॥ सकल सूर कूरंभ बर। संथ लिन्नौ अप [2]जत्ति॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जी परै न [3]भत्ति॥ छं० ॥ ६॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

पद्धरी॥ चढ्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं॥ छं० ॥ ७॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छची उठी भोमि भोरं॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क थानं। [4]अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं॥ छं० ॥ ८॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै। सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा'साइ मानैं। इसे बीर कूरंभ रैवान जानैं॥ छं० ॥ ९॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरव्वार आयं॥ ॥ छं० ॥ १०॥

---

(१) ए. कृ. को.-ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जित्ति।
(३) ए. कृ. को.-भित्ति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

दूहा ॥ *चौकी भौमानी चढ़ै। झाला रानिंग सथ्थ ॥
छोंगा बीर महाबली। बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चंपि काल पज्जून। बीर भोरा भीमंदे ॥
कै आयौ उप्परै। फुट्टि पायाल सबद्दे ॥
सकल सेन चमक्यौ। बौर भोरा उठि जग्यौ ॥
मलैसीह मुष काल। हाल सम [1]ब्याल सु [2]भग्यौ ॥
[3]बक्कार बीर छौंगा गह्यौ। सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि। समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जाना।

दूहा ॥ लै छौंगा बर [4]बीर चलि। चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस ते बाहुऱ्यौ। बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मझ्झ ते। लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछें बाहर चढ्यौ। दल चालुकी बीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी ॥ चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं। हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं ॥
सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं। छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥
छं० ॥ १५ ॥
बजै घाइ अघ्घाइ गज्जै हवाई। बजै आवधं मझ्झ आवद्ध झाई ॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे। परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सारं सारं चिनंगीस उट्ठे। मनो झिंगनं भद्दवं रैनि वुट्ठे ॥
घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं। परै अट्ठदह बीर कूरंभ पत्तं ॥ छं० ॥ १७ ॥

* ए. कृ. को.-"षिझ्झी विमान चिढ़्ढयो"। (१) ए. कृ. को.-ब्याल्ह। (२) ए. कृ. को.-लग्यौ। (३) ए.-चक्कार। (४) ए.-वालि।

परे सहस चालुक्क द्वै बान बीरं। तहां इत्तनैं भान अस्तंम नीरं॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मल्लै सीह पज्जून रां। दस दिसि क्त्तित्ति अवाज॥
दै छौंगा भोरा फिर्‍यौ। गयौ सुपट्टन राज॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कनै गिरि [1]लाज॥
छौंगा कूरंभ रावल्लै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि॥
घटि चालुक [4] बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह॥ छं० ॥ २१ ॥
मल्लै सिंह रानिंग सुत। सुब्भर भोरा राज॥
कूर्म अचानक यों पर्‍यौ। ज्यों तीतर पर बाज॥ छं० ॥ २२ ॥
* पज्जून राइ महाबल्ली। मल्लै सिंह धर पारि॥
छौंगा लै पाछे फिर्‍यौ। सुनि चालुक्क पुकार॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज॥
भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ।
(४) मो.-बधि। (५) ए. कृ. को.-तवी। * छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ [1]बालुक्का हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥
साम भेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त ॥ आइ षबरि चहुआन । [2]सु दल बालुक्कराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस । साह साहाब बैर कजि ॥
लष्य दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिरु कारी कढ़िय । समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध बालुक कमध । [4]कहें कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है ।

चालुक्का परि राइ । बीर बज्जे नीसानं ॥
सकल सूर सामंत । षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सबर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरंभ को दलै । नृपति इह तथ्य उच्चारिय ॥
जो चियन बस्य मन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनै ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का ।　(२) मो.-"सुबर, चालुक्का राइ सजं ।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि ।　(४) मो. कहौ कान चढ़ै ।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा ॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय [1]साज ॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की पशंसा करना।

कवित्त ॥ सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ भिल्लै न पान बर ॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क चंपि धर ॥
परमारह कमधज्ज। बीर परिहारय भट्टिय ॥
सकल सूर बर नटे। काल झंपै मति घट्टिय ॥
पज्जूनराइ पग अग्गरौ। करै नाम निरमल सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर ॥
छं० ॥ ५ ॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहुत धनुद्धर ॥
*जो मह नह पूजंत। जोग पल पंडन सब्बर ॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ असि असि अरि भारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि ॥
चालुकराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि ॥छं०॥६॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को.-दिष्षै।
(४) ए. कृ. को.-नजरि। * मो.-प्रति-जोगन पुज्जै जोग पल पंडन बीर।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल। कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल। ते सजि धाए [1]ऊंट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइं। स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं॥
मिलि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं। गई हह्ह चहुआन सुरतान मानं॥
छं० ॥ ८ ॥
बजै दुंदुभी देव देवं सु थानं। भयौ मुष्ष कूरंभ चितं स भानं॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग बर। बग्गसि राज तब बाज ॥
लिय कूरंभ कुल उज्जले। सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना।

कवित्त ॥ [2]षग्ग बंधि कूरंभ। आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र। तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर। सिंघ पाल्हन्न सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ। संग्र लीने भर सारं ॥
चित स्वामिभ्रंम सो अरि भिरन। लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि। बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन। पावस सक्क समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून [3]भर। सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं। कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं। मनों केवलं अंग बीरं सरीरं॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जूटं। (२) कृ. को.-षगा। (३) मो.-परि

चल्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिठी दिट्ठ दिट्ठी मनों बेद गायं॥
चढ्यौ राइ पज्जून छत्रं सुधारे। बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे॥
छं० ॥ १४ ॥
द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा ॥ तिथि पंचमि रवि बार बर। छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक ॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं॥
जित्ते तं सुरतान मान सरसं, आहत्त बानं बिषं॥
भूयो बाल भुआल भारथ कतं, कृष्णो धरा धट्टियं॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत॥ छं० ॥ १८ ॥
तहाँ हुए सगुन ए सुभ्र रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। बामह सुबीय सारस सुभाय॥
छं० ॥ १९ ॥
उत्तरै तार देवीति वार। डहकंत सद्द जुग्गिनिय भार॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर॥
तबै राइ चालुक्क बर। आइ [4]सँपत्तौ तीर॥ छं० ॥ २१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मुकाति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-वद्दे, कृ.-बंदै। (४) ए. कृ. को.-संपनौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ सँपत्ते स्तर भर। सुरतानां कमधज्ज ॥
कूरंभह पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज ॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ दुअ दीन हिंदु संमुहु प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन भान ॥
चहुआन स्तर रबि जेम बीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर ॥
छं० ॥ २३ ॥
कूरम्म दान षग रूप दीन। अज्ञान जान रज रूप कीन ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ करिग सेन संमुष सुबर। गरूड़ व्यूह किय बीर ॥
लरन मरन भारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर ॥ छं० ॥ २५ ॥
[1]ग्रिद्ध व्यूह कूरंभ करि। नाग व्यूह सुरतान ॥
षा ततार षुरसान पति। मंडि फौज मैदान ॥ छं० ॥ २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त ॥ [2]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय ॥
भट्टी सेन विषम्म। पिंड पावं अधिकारिय ॥
जानु होइ पुंडीर। नष्प स्वर मंस अंस करि ॥
चंच अंष सुभ जीह। बीर कूरंभ [3]पयद्धरि ॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [5]लहि लोहानौ [6]ठौर बर ॥
छचह [7]सुजीक पज्जून सह। दौरि फ्यौ बलिभद्र बर ॥ छं० ॥ २७ ॥

युद्ध की तिथि।

घरिय सत्त दिन रह्यौ। बार त्रौमीति सुक्र बर ॥
पंच बीस आवट्टि। * थट्टि लोथं सुबंधि थर ॥

(१) मो.-गरुड़। (२) मो.-पंग। (३) ए. कृ. को.-राइ धरि।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह। (५) ए. लरि। (६) मो.-मीठि। (७) मो.-मुनीक।
* ए. कृ.- को.-"लुध्थि पर लुध्थि बंधि थर"।

कूरम्मह षग झारि। सार भारथ्थ सु किन्नौ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टंकार सु झिन्नौ॥
आचार चारु राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [1]सुर॥ छं०॥ २८॥

श्लोक॥ मानवं दानवं नैवं। देवांनां कुरु पांडवो॥
कूरम्म राइ समो बीरं। न भूतो न भविष्यते॥ छं०॥ २९॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त॥ हाइ हाइ कहि ध्रुह। इष्ट बलिभद्र अंमरिय॥
बलिय तप्प कूरंभ। सार साहित्त घुम्मरिय॥
यों पजून दल मल्यौ। क्षोइ ओपम कवि भाइय॥
कमल पंति गजराज। सरित मझ्झह झुकि ग्राहिय॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट। करिय एम कूरंभ घट॥
सुघ्घाट आइ कुघ्घाट किय। सुभट घाइ भारथ्थ [2]यट॥ छं०॥ ३०॥

दूहा॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि। ते अंगन दिष्षाइ॥
रुधि सुक्कै कद्दम हुए। हय तरंग सुभ्भाइ॥ छं०॥ ३१॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुद्ध सुचालुक रुद्द तहँ। च्यार बंध परि षेत॥
पंच भ्रात कूरंभ बर। उप्पारे सु अचेत॥ छं०॥ ३२॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त॥ उप्पारिग पज्जून। बीर बलिभद्र उपारिग॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु। घाव [3]सठ्ठ तन धारिग॥
परि पंचाइन कन्ह। जैत जैसिंह जुवानं॥
हिंदु बीर दभ्भज्ञान। मेच्छ गड्डन परिमानं॥

(१) मो.-अमर। (२) ए.-तट।
(३) ए. कृ. को.-सटे।

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौ ॥
जस जैत लियौ कूरंभ रन। जीअन अवनि सु धारयौ ॥ छं ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंशा।

दूहा ॥ *आज भाग चहुआन घर। आज भागं हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। (१) लाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४१॥

(१) ए. कृ. को.-नर।

* छन्द ३४ मो.-प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय ।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन [1]चिंत चंदह कर्‌यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है बर [3]बिसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक बेद जोजन प्रमान । यटे * संघल क्रत पाइय ॥
साज लष्य तन लष्य । सकल बल कोरि सजाइय ॥
धानुक्क धार सत अट्ठ चलि । करन तिथ्थ जाचह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[7]गज घंट्टन चंबाल । भेरि सहनाइय बज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । पुरन चियलोक [8]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
शृंगारिय गढ़ हट्ट । [9]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

---

(१) मो.-चित्त । (२) मो.-पैं । (३) ए. कृ. को.-विलास ।
(४) ए. कृ. को.-बारुनह । (५) मो.-समथ्थह ।
* पाठ अधिक है । (७) मो.-घज । (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय ।
(९) मो.-मनो इन्द्र थान विसिष्षिय ।

बजि चंग बंब वज्जन बहुल। मन उच्छाह भिष दान दिय॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [१]तथ्य डेरा करिय॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा॥ गिरवर झूंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर॥ छं०॥ ४॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर बर॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्षयौ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्षयौ॥ छं०॥ ५॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइब। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कहि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्य॥
मुहु अग्गे सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य॥ छं०॥ ७॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त॥ नगर अजोध्या न्रपति। नाम कौरत्ति धवल्लं॥
सर ऊसुरि तातट्ट। रमत सिक्कार सयल्लं॥
तानि वान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय॥
तरफंरत अवलोकि। श्रोन घन धार अवंतिय॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत॥
चढ़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत॥ छं०॥८॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्य। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्य्यंत मो.-प्रति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि। सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
सुनि कान बानि रानी प्रफुल्लि।[1]उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्ष। उठि चलिय मिलन मारग गवष्ष ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ। तड़िता कि तेज तारक दिषाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्ष गिरि झंप पात। पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिथ्थ अस्नान दान। कोटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं० ॥ ११ ॥
अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ। अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल। आइ गिरि कंदर प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स। भंजि ऋँग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कंति चमकंत। जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत। जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्प अंसू ढरत। पंसूरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि। गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥ छं० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि। श्रवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर [1]कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें। मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
ग्रभवंती हिरनी हनी। तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल्ल। बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन। अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रूप माल सु विसाल। मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति। विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) कृ.-पोह।

नरकंध रैथ्थ के आरुहिय। ढंकि छब्बि मनौं अंब जल॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद्द। मोघ निरषि मनुराज यल॥
छं०॥ १६॥

कितक छब्बि वस्त्रंग। मड्डि माला मुत्तिय मनि॥
सीतारामी सहस। कनक थारी सत बीजनि॥
अगर पान अड़सट्ठ। रजक पालिका पठाइय॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारँग [१]मुह गाइय॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहुं। भरन भार अभ्रन भरिय॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सषियन आदर करिय॥
छं०॥ १७॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा॥ दिय बहोरि न्नप नगर कों। प्रिय आसीस पढ़ाइ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [२]कूप कल नाइ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि॥
फुनि नरिंद चिचंग मिलि। चंद दंद तन मेटि॥ छं०॥ १९॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं॥
छं०॥ २०॥

[३]लोह कुंड रचे सुर सची। कुरछन झारि दियंत सु षिची॥
मनौं ओपमा में छबि [४]रची। जेबैं बरन अठारह जची॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय॥
कलिनि कलंक कास्त्र कटि भारिय। जेंबै सब परिगह परिवारिय॥
छं०॥ २२॥

(१) ए.-सुह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो..लहाँ। (४) मो.-मेछ ते रंचा।

केसर अगर पौरि सब किद्धिय। पान सुपारि कपूर. प्रसिद्धिय॥
हथ्थी है मोती नग विद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज द्वै तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय। जो चिचंग अत्य सम राइय॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्यासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्भर। दीय सु दान मान अपरंपर॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पीर॥
पंथ एक पष्यह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिट्ठिय देवल धज्ज। पापै परहरि अंग अगन॥
गजत पिट्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्य पर॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा॥ हाटक मंडप छच लहि। मुत्तिय [२]पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मभ्भ। कल मष कट्टत काल॥ छं० ॥ २८ ॥

फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्यि प्रमान॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान॥ छं०॥ २९॥

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल। (२) ए.-मंतिय, पंतिय।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति ।

रसावला ॥ तुम्रं देह हट्टी, तुम्रं मान षट्टी । तुम्रं बीर दट्टी, तुम्रं थान यट्टी ॥ छं० ॥ ३० ॥

तुम्रं लोक पालं, तुम्रं जालमालं । तुम्रं भाल भालं, तुम्रं द्रिग्गपालं ॥ छं० ॥ ३१ ॥

तुम्रं देस दष्षी, तुम्रं भीर भष्षी । तुम्रं द्रोप रष्षी, तुम्रं सर्ग सष्षी ॥ छं० ॥ ३२ ॥

तुम्रं तीन रष्षी, तुम्रं ब्रह्म लष्षी । तुम्रं पंष रोही, तुम्रं गोप मोही ॥ छं० ॥ ३३ ॥

तुम्रं सचु दोही, तुम्रं रुग्र सोही । तुम्रं सिद्धि तूंही, तुम्रं रिद्धि सोही ॥ छं० ॥ ३४ ॥

तुम्रं सर्ब अंडं, तुम्रं तीन कुंडं । तुम्रं पित्त [1]षंडं, तुम्रं यार मुंडं ॥ छं० ॥ ३५ ॥

तुम्रं ग्यान गट्टं, तुम्रं रंभ यट्टं, । कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ हरिहर वच सच वारि बर । पुर धरि सिर पर इंद ॥
मनुँ गुर तरु फर भार नमि । झलमलि हलि गोविंद ॥ छं० ॥ ३७ ॥

देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी । नमो तुं नमो तुं ज संसार सारी ॥
नमो तुं अभष्षी नमो बीज भष्षी । नमो रिष्य पूजंत सज्जंत सष्षी ॥ छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई । नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जालं विकालंत राई । नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई ॥ छं० ॥ ३९ ॥

*नमो सस्सिपालं अकालं अभष्षी । नमो काल जन्मं न कालं न सष्षी ॥
नमो एक भग्नी भरत्तार पंचं । नमो कोरि कोरं करत्तार संचं ॥ छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं । (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ्झ, तुझे । (३) ए. कृ. को. गिरज्जा ।

* मो.-नमो सस्सि पालं अकालंत राई । नमो काल जमन्न कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तुं रिद्धि तुं दद्धि पानी। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो किंत्ति तुं मंच तुं गीत गानी ।[1]नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

नमो विश्व तुं भिरत्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तुं धूम्म तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अठ्ठरानी॥
छं० ॥ ४२ ॥

नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्द। नमो मुंड मुंडं तुहीं पारि सद्द॥
छं० ॥ ४३ ॥

नमो पच तुं छच तुं छित्ति धारी। नमो वृद्ध तुं वृक्ष तुं अध्ध हारी॥
नमो रूपतुं रंग तुं राग [2]रत्ती। नमो भील तुं भाव तुं सील सत्ती॥
छं० ॥ ४४ ॥

नमो भत्त तुं हत्त तुं वारु बान्नी। नमो चंद चंडी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा॥ करि असतुति ससतुति सुबर। होम हवन हरि नाम॥
सीवन तुला सु सांज बरँ। करि सुभट्ट मुंचि काम॥ छं० ॥ ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्थिय [3]द्रव्व दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नींहिं दिवावहिं॥
ते दरवारह चढ्ढि। न्याय हय पिठ्ठ दगावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]भूलत तर वर॥
दीनी न जिनंहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-रंगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-अनत आनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनों मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं। (५) ए.-झूमत, को.-मूलत।

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]पेरिरंत नर ॥छं॥४८॥
भद्र भेषनह हुए। जाइ गोमुक्ति न न्हावै॥
तजै न भ्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं॥
आहू अंष परंत। करत उपवास अनेकं॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम॥
छं०॥ ४९॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर॥
तिन सेवर बदि बद्द। चंद मावस उग्गा बर॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाप लहि॥
उपकंठ महल सागर प्रवल। सघन साह [3]चाहन्न चलहि॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं॥
बिप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बादह पर्‍यौ॥
अब्बेक चीर छूपरु फिरंग। मनों मेर कंठै भर्‍यौ॥ छं०॥ ५१॥

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दारह।

*"कविचंद कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दो की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।

(३) ए. कृ. को.-बाहन।

पलक विविध घन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुक्कत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कट्टै मुषह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन। कबि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्ध नराच ॥ बजान बज्जयं घनं। सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं। समुद्दयं पट्टा झरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]म्रग्यंद कै गजं बरं। .... ॥
हलं मलं हयं गयं। नरा नरं-नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं। सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि भानयं। नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं। इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं। .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं। परीस रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संमयं। अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं। .... ॥
अरुढ़ काम रथ्ययं। सु उत्तरी समथ्थयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनंहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कगजं गरं। (२) मो.-सुधा।

किनक आन भोरा कह्यौ। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समष्षन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपष्षन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लक्कि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय ॥
षल दुग्र भट्ट आयौ वरै। करि झुझ्झौ मंचह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन षेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। बेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बध्धिय। चंद जानी वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझ्झौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥छं०॥६५॥

दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
बत्त घत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अष्षिय द्रब कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) मो. सलष्षन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह आष्षिय इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिए। प्रथु किय कित्ति अपार ॥
जगदेवह भोरा भनिय। [1]काह सु-कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना।

सोमेसर किन बधिय। सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर कों सहिय। किद्ध किन आनू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस। वह सु दिल्ली विरदामें ॥
कूप पीर आदरै। धाम उदरे हत धामें ॥
वागुरिम हत्त अवतार गनि। भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ। कलि प्रगटिय मनुं सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी। च्यार हंडी [2]रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाब। सुइ सूंपी तुर [3]तानिय ॥
इक्क राइ परमार। सधर सिर वानग जित्यौ ॥
करन मंद चालुक्क। दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर। सु इह बत्त जुग सब कहिय॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि। एक राइ तुम उद्धरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दस लष्षन भष्षन करै। प्रथु सामत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन। तब सिर छच उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परें। दरियापति दस लष्ष ॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर। सित्त सूर पति भष्ष ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ।

कवित्त ॥ दइय सीष जगदेव। जाहु तुम लै आऔ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत। तदिन पिष्षौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर। पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) को.-कवि। (२) ए. कृ. को.-रंधानिग। (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग।
(४) ए. कृ.-मूग्ग।

मेछ मिलै षट षंड। परम [1]उतमंग जुध जुरहैं ॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम करै ॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा ॥ आइ सु भोर चंद यह। हय गय नर भर भार ॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार ॥ छं० ॥ ७३ ॥
देषिय डेरा भीम न्रप। उच्चै यह आवास ॥
गौष पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [2]रास ॥ छं० ॥ ७४ ॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमंग ॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी ॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अन्नेक दीप वाहन उतंड ॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर ॥छं०॥७६॥
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष ॥
प्रति तिरें मच्छं सागर पयाल। बहु लिए रतन अन्नेक माल ॥
छं० ॥ ७७ ॥
तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सभ्भ गुज्जर नरेस ॥
मझ्झि दीप रोम राहव० कुसाब। संजाल दीप प्रति काल आव ॥
छं० ॥ ७८ ॥
गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन भुभ्भ दभ्भि आसिष्य बीर ॥
हय मुष्य ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]टेक ॥
छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन अरोहि लीने असंघ। प्रति पान पुरातन लङ्ग पंघ॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि। इन भंति चंद्र कवि करि तबन्नि॥
छं०॥ ८०॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदान सु दिन्निय॥
बाद [1]बद्दि देवंग। सुपन पिष्षिय मन सिद्धिय॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय॥
थूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय॥
नट्टी जु सषी उपजी अनल। सुरस बंचि नंचौ कलिय॥ छं०॥ ८१॥

अरिल्ल॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं॥ छं०॥ ८२॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि भत्त है गै पति चलियं॥
चंद संत्र पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं॥
छं०॥ ८३॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन घुर षेह॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह॥ छं०॥ ८४॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

॥ प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ षरि गजनेस॥
कूच कूच मग चंद षरि। पहुंच्यौ घर दानेस॥ छं०॥ ८५॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागंमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४२॥

(१) मो.-छंद।

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते।

(तेंतालीसवां समय।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहाबं। अष्यिय समह षान तत्तारं ॥
अरु षुरसान विचारं। संमर समुष राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १॥

तत्तार खां का वचन।

उच्चरि ताम तत्तारं। अरि अति जोर हर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं। षट्ट दिसि मंत साह साहाबं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन।

हनूफाल ॥ बर मंच किय सुरतान। कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिल्लिय चिंत। षट्टूअ दिसि मन पंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त हर च्यालीस। बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान। साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्य [1]अस असवार। बानैत सहस चिआर ॥
पयदल सु लष्य प्रचंड। चय सहस मद गल भंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदभि बज्जि। भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि। सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान। षह षेह रुंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो..लष।

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रवि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आब ॥ छं० ॥ ८ ॥

हनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आव। सम चढ़े षान नवाब ॥
तत्तार मंच सु प्रौढ़। षुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। बर लाल षान [4]नहन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा ॥ उतरि साद बर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोलि षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार बर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहै साहि के दार सम। कहौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
धुम्माइन काइय सुकर। इह लिष्यी अरदास ॥
आषेटक षेलन न्रपति। मन किय पट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक दस दिसि न्रपति। चढ़ि चल्यौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय बत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित सुरतान ॥
[9]गुज्ज महल सब बोलिकै। बैरे कारन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) मो.-रति। (२) मो.-सूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुसन्न।
(४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-चाइ। (६) ए.-मंनि।
(७) ए. कृ. को. सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

पद्धरी ॥ साहाब कहै तात्तार षान। उपजै सुमंच अष्षौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय। कैमास आन कीनी सहाय ॥
छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत। झुझ्झंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आपैति वार। सम लालषान हस्सन हकार ॥ छं० ॥ १९ ॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति। साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस। कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥ छं० ॥ २० ॥
सामंत कितक बल सूर कौन। लग्गें सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल [3]अछेह। देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥
छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आनें सु राज। हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥ छं० ॥ २२ ॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान सुष। बंध्या जोर सहाव ॥
रह षट्टू दिसि चल्लियैं। उलट कि साइर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस। चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाब। [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार। तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच। [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर। काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ। ढिंग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ। सज्जि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं। दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

---

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. कृ. को.-अछेक।
(४) ए. कृ. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यौ। (६) मो.-सत्तह।
(७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

बेर बेर आवंत इह। मानै मेछ न संधि ॥
उरह लौन प्रथिराज कौ। आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुनत बचन कैमास के। कही राव चावंड ॥
आन राज चहुआन पिथ। हौं मारौं गज झुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनि संभरि न्टप मौज दिय। हैवर सहस मँगाइ ॥
मनि मोती सोव्रन रजक। हसती [1]सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
गैवर दस हय सात सै। दिय कैमासह राइ ॥
तुरी तीन सै बीज गति। दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतो के नाम कथन।

भुजंगी ॥ चव्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं। चढ़े लष्य [2]पावं समं सूर साजं ॥
चलै मुष्य अग्गै सुहथ्थी हजूरं। मनो प्रब्बतं झिरन मद भरत पूरं ॥
छं० ॥ ३० ॥
चल्यौ मंच कैमास सा काम अग्गै। वियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै
जूचल्यो लंगरीराइ रन्न जंगं। सकं राइ गोइंद सा काम अंगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
*चल्यौ चच्च कन्हा नरं नाह रन्नं। चले बीर पामार तेजं तिनन्नं ॥
†बरं बीर नर सिंघ हर सिंघ दोऊ। भरं राम बड़ गुज्जरं कनक सोऊ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरन्नं। चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं बरन्नं ॥
नरं निढ्ढुरं सूर कमधज्ज रायं। चल्यौ बघ्घ बघघेल रन जुरन चायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम।

भुजंगी ॥ चल्यौ तमकि षुरसान साहाब भानं।
चली फौज तत्तार षुरसान षानं ॥
वरं रुस्तमं षान [3]आषूब मानं।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं ॥ छं० ॥ ३४ ॥

---

(१) मो.-सत्त अनाइ।
(२) मो.-एकं।
* ए.कृ.कों-चल्यौ सथ्थ कोका नरनाह कन्हं।
† ए. कृ. को.-बरं वीर हरसिंह वरसिंह दोऊ।
(३) मो.-आकूब।

दिपै षान दरियाव दरिया समानं। लुप्यौ अश्व [1]षुर षेह रवि आसमानं॥
चल्यौ पष्परं धार पति षान षानं । उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥

चल्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूषान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गष्परं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥

चल्ययौ [3]पतिक मारुफषां सो अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी [4]पठानं॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीबषानं। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥

चल्यौ ग्यास दीचस्त गरुअत्त षानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फ़ासले पर डेरा पड़ना ।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन । दोऊ समद समान ॥
उत साहिब षुरसान कौ । इत संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन ।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्थ राजं॥
बरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौरं सद्द बैरत्त बानं॥छं०॥४०॥
षरौ फौज में सीस सुविहान छचं। तिनं देषतें कंपई चित्त सचं॥
तहां धारि हयनारि कामनेत पचं। .... ॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त बैरष्ष की बनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मंघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। बिना राइ चहुआन को सहै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो.-पुर हेवरं। (२) ए. कृ. को.-आगंम। (३) ए.कृ.को.-मलिक।
(४) ए.को.-प्रमानं। (५) ए.कृ.को.-"हलें रत्त चौरं सवै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि सूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मह ॥
सुनि अवाज संसार। लष्ष चयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्ष पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ बर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥छं०॥४४॥
दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षबरि चहुआन। मंचि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्जौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडम्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू धरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड महा भर ॥
तुम कुलीन बर लज्ज। लज्ज मो तुमह कंध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज बढ़ै ॥
कहै ताम कैमास। राज दिन सुध लै चढ़ै ॥
इह कहिरु घाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज चढ्यौ रबि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥छं०॥४७॥

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[1]सुर नाम ॥
सुनी षवरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षबर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षबरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सममुष मंडै [2]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहां सुभ्भर ॥
मन्नी सु बत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग जंग [3]न्रप नाह नर। कंन्ह कंक अग्गें धरिय ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [4]सजी मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभें पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत मै मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहां कंन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [6]तीसरी फौज बाजिच बाजे ॥
सहस पंच असवार गैहै सु पुंचं। सहस पंच [7]माले सहै लोह अंचं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पब। (३) मो.-नरं नाह न्रय।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ., को.-चाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले याले।

बरं पंच हथ्थी सहस पंच बाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भंलै पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥

सजी पंचमी फौज पामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभे पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त बर पूंच [2]ठड्डं॥
छं० ॥ ५४ ॥

इसी पंच फौजै चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाब को सहै तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चढ्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छत्र [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब तब। सजि आयौ चहुआन ॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

भुजंगी ॥ सुभै गोरियं जंग ठट्टौ गुमानं। उभै लष्ष बाजं सु तथ्यं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले खरै लोह पानं। .... ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अढ़ी सहस मैमत्त मद झर प्रनारं। दुजी ओपमा झिरत झिरना प्रहारं॥
भलै मीर देषे दिये देढ़ [4]लष्षं। इमं चढ्ढियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥

तियं फौज षुरसान षां चढ्ढि तेजं। उभै लष्ष असवार बर बाज मेजं॥
उभै लष्ष कमनैत हथनारि हथ्थं। सजे फौज नौहथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥

बनी फौज चौथी चढ्यौ षान षानं। सुअं षान षंधार बर विरद वानं॥
दुअं लष्ष असवार पल्ले दुलष्षं। अढ़ी सहस हथ्थी कमनैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥

असी सहस असवार करव ला[5] सेनं। सवै अंग सन्नाह विन दोइ नेनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चलै लष्ष है जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बट्ठं।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-लष्षैं, भष्षैं। (५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं।